HINDI EDITION

STOCK MARKET BASICS

N. PATIL

Content

Sr No	Chapter Name	Page
1	शेयर मार्केट में सबसे पहले क्या सीखना चाहिए?	2
2	क्या शेयर मार्केट कोर्स खरिदना उपयोगी होगा?	6
3	शेयर मार्केट की पढ़ाई कैसे की जाती है ?	8
4	**IPO** क्या है: अर्थ, परिभाषा, प्रकार	10
5	ट्रेडिंग क्या है?	13
6	क्या मैं ट्रेडिंग किताबों द्वारा सीख सकता हुं?	16
7	डिविडेंड का मतलब क्या होता है?	18
8	बोनस क्या होता हैं	20
9	फंडामेंटल एनालिसिस कैसे करें **5** मिनट में?	23
10	मल्टीबैगर शेयर की पहचान कैसे करें?	26

www.nishatimes.com

1.शेयर मार्केट में सबसे पहले क्या सीखना चाहिए?

अगर आप शेयर मार्केट में नये हो या अभी शुरु करने की सोच रहे हो तो आप बिल्कुल एक सही आर्टिकल पर आये हो।

अगर आप 10-15 साल पहले शेयर मार्केट को सीखना स्टार्ट करते तो आपको कुछ चुनिंदे ब्लॉग्स और वारेन बफेट की किताबें मिल जाती। लेकिन तब आपको आसान था शेयर बाजार को सीखना अब सोशल मिडिया पर हर तरफ क्वीक पैसा, प्रॉफिट के स्क्रीन शॉट दिखाये जायेंगे और आपको लगेगा इससे अच्छा तो कोई होगा ही नहीं लेकिन उनका प्रॉफिट तभी होगा जब आप लॉस में होंगे और वो आपको सपना बेचेंगे।

इसलिये इस आर्टिकल के द्वारा में कुछ ऐसी महत्वपूर्ण चींजे बताऊंगा जिसकी की आप पढे लिखे हो या ना हो, आप गरिब हो या अमीर, आप कॉमर्स बॅकग्राऊंड से हो या आर्ट कोई फर्क नहीं पड़ता। इस आर्टिकल से में आपके सारे प्रश्नों को जवाब देने की कोशिश करुंगा जिससे आप शेयर मार्केट को अच्छे से शुरु कर सके।

स्टॉक मार्केट से कितना पैसा कमा सकते हैं?

अगर सपने बेचने है तो कुछ भी बेचा जा सकता हैं। लेकिन ऐसे भी उदाहरण आपको मिलेंगे जो अच्छे हैं और दूसरे ऐसे भी कुछ होंगे जिन्हें बहुत बड़ा नुकसान हुआ। चलिये हम समझते एक उदाहरण से..
अगर आपने 30-40 साल पहले अगर Wipro Share में 10,000 निवेश कर लेते तो आज आपके पास 700-750 करोंड़ होते। लेकिन अब कोई बोलेगा उस समय किसके पास उतने रुपये थे लेकिन आप 100 रुपये भी निवेश किया होते तब भी आज 7 करोंड़ रुपये होते। इससे पता चल ही जायेगा की शेयर मार्केट में पैसा बनता हैं।

लेकिन इसका उल्टा भी हैं मतलब कुछ सालो में ही Kingfisher डुब गई, Videocon डुब गई और Zee की हालत भी आप देख ही रहे। इससे यह भी पता चलता हैं की अच्छी-अच्छी कंपनीज जिसके बारे में हम सब अच्छा सोच रहे होते हैं वो एकदम से डुब भी जाती हैं। ऐसे कई कंपनीया आपको मिलेंगी जैसे सत्यम, यस बैंक, CCD और यहां तक की हिंडेनबर्ग की रिपोर्ट आई थी तब अदानी शेयर में भी ऐसा ही होगा लेकिन नहीं हुआ।

तो आपको लग रहा होगा ऐसा क्यु होता हैं तो मैं बता दु की आप जब शेयर खरिदते हो तो आप शेयर नहीं बल्कि कंपनी के बिजनेस में पैसा लगाते हो और आपको पता ही हैं की कभी बिजनेस जोरों से चलता हैं तो कभी धीरे कभी कोई बिजनेस रातो रात बंद हो जाता हैं। ऐसा ही शेयर मार्केट में चलता हैं इसलिये आपको बहुत अच्छा भी दिखेगा और बहुत बुरा भी तो यह मार्केट की नेचर हैं।

कितनी जल्दी शेयर मार्केट से पैसा कमा सकते हैं?

यह पढ़ने वालों में बहुत सारे बोलेगी की में जॉब कर रहा हु, मैं स्टुडेंट हु, मेरे ऊपर लोन है, मुझे तो 10 मल्टिबैंगर शेयर बता दो? जिससे में जल्दी पैसा कमा सकु।

मैं पिछे आपको बताया हु की स्टॉक मार्केट एक बिजनेस हैं जिसमें आप शेयर खरिदकर पार्टनर बनते हों। अगर आप पार्टनर हो तो आपका प्रॉफिट कितना होगा? हां सही सोचा जितना कंपनी का प्रॉफिट होगा उतना। आपका पैसा वैसे ही बढ़ेगा जैसे वो बिजनेस बढ़ रहा हैं। इसमें कभी कभी उतार चढ़ाव आयेगा जैसे कोविड के समय हुआ था। तब जिसने भी शेयर बाजार में निवेश किया था उसको 1-2 साल में बहुत ज्यादा रिटर्न मिला था।

कभी कभी बिजनेस में आपके 10 लाख की लागत 25 लाख में बिकेगी वहीं आपको कभी कभी 25 लाख का माल 5 लाख में भी बेचना पड़े वैसे ही शेयर मार्केट में होता हैं। तो आपको इसमें बैलेंस करना पड़ेगा।

आप अगर निवेश करने जायेंगे तो ज्यादातर आपको स्टॉर्टअप कम और ग्रोथ हुई बडी कंपनीया ज्यादा दिखाई देंगे। जितनी बड़ी ग्रोथ हुई कंपनी आप देखो गे तो ज्यादातर केस में उनका ग्रोथ रेट स्लो हुआ रहता हैं। अगर रिलायंस सोचो 5 लाख करोंड़ का सेल करती हैं तो वह थोड़े समय में डब्बल तो होगी नहीं वो ज्यादातर 10% , 20% बढ़ा लेगी बस इतना ही। बड़ी कंपनीयों के साथ यही दिक्कत आती हैं। इसमें समझनेवाली बात यह हैं की हाथी चिते की रफ्तार से नहीं दौड़ सकता भारी हैं वैसे ही शेयर बाजार में चलता हैं।

हमे यह समझने होगा की जितनी बड़ी कंपनी उतनी रफ्तार धीरे होगी। अगर भारत की की जीडीपी 6-8% भी बढ़ेगी तब भी हमारे जो बिजनेस हैं वो 15-20% तक ही ग्रोथ दिखायेगी मानलो दुनिया का बेस्ट बिजनेस भी होगा तब भी वो 25% तक ही ग्रोथ करेगा।
तो हम जब शेयर मार्केट में निवेश करते हो तो आपका रिटर्न 15-20 तक लेकर चल सकते हैं अगर आप दुनिया के बेस्ट इन्वेस्टर्स हो तो ज्यादा से जादा 25% तक मिल सकता हैं।

तो आप समझ गये होंगे की आप On an Average 14-18% तक के रिटर्न जनरेट कर सकते हो। लेकिन कभी कभी कोविड जैसी परिस्थितियों में यह 40-50% तक भी देखने को मिल जाता हैं।

मुझे ज्यादा रिटर्न्स चाहिये इसलिये पेनी शेयर लुंगा

कुछ लोग कहेंगे कि मुझे 15-18% नहीं चाहिये तो क्या मैं पेनी शेयर ले सकता हु? तो इसको भी समझना बहुत जरुरी हैं। चलिये समझते हैं विस्तार से।

आप जब शेयर खरिदते हो तो आप कंपनी के पार्टनर बन जाते हो तो आप अंबानी- टाटा जैसे कंपनीयों में पैसे लगाओगे या जिस कंपनी पर लोन हैं, केस चल रहे हैं, जिसकी 2 कंपनीया बंद हुई हैं और तिसरी शुरु की हैं? आप ऐसे ही कंपनी पे ज्यादा विश्वास करोंगे जो पहले प्रुवन हैं ना की ऐसे जिसके शेयर 1 रुपयें पर मिल रहे होंगे।

तो आप कहेंगे 1000 रुपये हैं तो 1 रुपयों के 1000 शेयर आ जायेंगे बड़ी कंपनी का तो 1-2 ही आयेंगे? तो? इसका भी जवाब आपको मैं देता हु।

उदाहरण के तौर पर मानें A कंपनी के शेयर आपको 1000 रुपयों में एक ही मिल रहा हैं वहीं B कंपनी के 1000 रुपयों में 1000 क्वांटिटी शेयर मिल रहे हैं तो ऐसे में आप कहेंगे 1000 शेयर लेना सही रहेगा क्योंकी A कंपनी का तो एक ही शेयर मिल रहा हैं ना। तो ऐसा नहीं होता कंपनी को हमेशा प्रतिशत में देखो। अगर 1 रुपयों वाला B शेयर 10 प्रतिशत बढ़ेगा तो उसकी किंमत हो जायेगी 1000× 1.01= 1100 रुपये वहीं A कंपनी भी 10% बढ़ेगी तो भी उसकी किंमत 1100 रुपयें ही होगी। तो शेयर की ग्रोथ का क्वांटिटी से कोई लेना देना नहीं होता आपको अच्छे शेयर लेने चाहिये भले ही वो 1000 रुपयों का भी एक मिल रहा हो।

अब आप कहोगे की अरे लोग Intraday से लाखो पैसे कमा रहे हैं तो उनका क्या? चलिये उसके बारे में भी बात करते हैं।

ऐसा नहीं की कुछ लोग इंट्रा-डे और Future & Option करके पैसे नहीं बना रहे। ऐसे भी लोग आपको मिलेंगे लेकिन उससे 70-100 गुना ज्यादा लोग नुकसान करनेवाले भी दिखेंगे।

सोचो अगर ऐसा कोई तरिका होता जिससे साल की 20-25% या 100% गुना रिटर्न कमाने का तरिका होता तो अंबानी समुंदर के नीचे केबल नहीं बिछाते रहते, ना ही इलोन मस्क लाखों लगाकर टेस्ला फॅक्टरी बनाता।

www.nishatimes.com

ऐसा नहीं हैं की इंट्रा-डे से कोई लोग कमाया नहीं हैं लेकिन कमानेवाले कम और गवानेवाले आपकों ज्यादा मिलेंगे, हां यह बात भी उतनी ही सच हैं की आपको लॉसेस कोई नहीं दिखाता इससे प्रॉफिट ही दिखाते हैं।

एक बात सोचना अगर ऐसी कोई सिक्रेट स्टेटर्जी होती तो कोई बंदा युटुब के माध्यम से लोगों को शेयर करता क्या? कोई शेयर मार्केट को हजारों-लाखों रुपयों के कोर्स कोई बेचता क्या? नहीं ना। तो शेयर मार्केट में किसीके बहकावे मत आओ जो दिखता हैं वैसे होता नहीं हैं। अगर आपको रिस्क लेना ही हैं तो कैसीनो में जुआ खेलो क्यु दिनभर स्क्रिन के आगे बैठ रहे हो उसमें ज्यादा प्रॉफिट के चान्स हैं शेयर मार्केट कि तुलना में। इससे अच्छा हैं कहीं लॉटरी की टिकट निकाल लो क्योंकी यह भी पेनी शेयर लेने के समान ही हैं।

कब शुरु करना सही होगा?

अभी सवाल आयेगा की मुझे निवेश स्टुडेंट होते हुये करना चाहिये? जॉब लगने के बाद करनी चाहिये ? या लोन लेकर करना चाहिये? तो चलिये जानते हैं हमारी राय।

पहले तो आप प्रयास करो की आप पढ लिखकर अच्छी कमाई कर सको क्योंकी कमाई ज्यादा होगी तो ही निवेश ज्यादा होगा। मेरे हिसाब से शेयर मार्केट तभी करना बेहतर होगा जब आपके हाथ में पैसा आना शुरु हो जाये भले ही वो कितना ही कम क्यु ना हो। लेकिन अगर आप एक स्टुडेंट हैं और आपको शेयर मार्केट शुरु करना ही हैं तो आप शुरवात में वर्चुअल निवेश करके देखो आपके लिये यही सही होगा।

वर्चुअल निवेश मतलब अनेक ऐसी वेबसाईट और ऐप्स हैं जिसमे आपको नकली राशी दे दि जाती हैं वो आप अलग अलग शेयर को वर्चुअली ले कर रख सकते हो। जैसे जैसे इधर प्राइस कम ज्यादा होगा उधर भी आपका होगा और आपका प्रोफिट लॉस कितना हो रहा हैं यह पता लगता रहेगा। ऐसा करने से आप अलग अलग सेक्टर, कंपनी की जानकारी लेते रहोगे, अपडेट लेते रहोगें उससे आपको बाद में काफी नॉलेज और फायदा मिलेगा। लोन लेकर या किसी से उधार लेकर कभी भी निवेश अथवा ट्रेडिंग ना करें यह काफी रिस्की हो सकता हैं।

तो जॉब या बिजनेस से पैसे आना शुरु हो जाये तभी आप शेयर मार्केट में पैसा लगाना शुरु कर सकते हैं।

कब निवेश करना चाहिये?

आपको तो इसकी चिंता करने की जरुरत ही नहीं हैं। चिंता तो उसे करनी चाहिये जो अपने मां बाप की पुंजी या अपने रिटायरमेंट का पैसा लगा रहा हो जो लॉस में जायेगा तब दिक्कतें होंगी। ऐसी चिंताये उसे करनी चाहिये जिसके पास आगे पैसा नहीं आनेवाले आपके पास तो पैसा आगे आयेगा ना तो डरना क्यु हैं।

आप तो अभी शुरु करनेवाले हो अथवा कर चुके हो तो आप निवेश करने के बाद मार्केट नीचे जाता हैं तो। अवरेज करने के लिये 30-40 साल हैं ना इतना क्या डरना? अच्छे अच्छे शेयर में निवेश करो और भुल जाओ पैसा आपके लिये काम करेगा।

अगर आज मार्केट गिरता हैं तो और ज्यादा निवेश करों बाद में दुगनी तेजी से ऊपर आयेगा जैसे कोविड के वक्त हुआ था। निवेश शुरु करने का कोई सही ग़लत वक्त नहीं होता। कम निवेश करों लेकिन शुरु करो यही सलाह दुंगा।

कितना पैसा में निवेश करु?

अपने पैसों को दो पार्ट में डिवाईड कर दो। यह आपके जो गोल्स होंगे उसके लिये आप इनका इस्तमाल कर सकते हो EMI भरने के लिये, जैसे गाड़ी लेनी हैं, घर लेना हैं इस तरह के और गोल के लिये जो जरुरी हैं। आप

www.nishatimes.com

यह पार्ट इस्तमाल करो म्युचुअल फंड में जिसमें आप बिल्कुल भी रिस्क नही ले सकते जो आपको चाहिये ही चाहिये।

दुसरा पार्ट जो आप अपनी वेल्थ बनाना चाहते हो उस पैसे से स्टॉक मार्केट में निवेश करों जिससे आपको आमिर बनना हैं। जो गोल ऑप्शनल हैं वैसी चीजों में आप इनको लगा सकते हो। ऐसा पैसा ही यहां आपको निवेश करना हैं जिसमे लॉस भी हो जाये तो आपको फर्क ना पडे। एक बात हमेशा याद रखना नये रिटेल निवेशक में 90 प्रतिशत लोग शेयर मार्केट में नुकसान कर लेते हैं यह हम नहीं NSE, BSE का डेटा बताता हैं। तो आपको 10% में रहना हैं ना की 90% में।

अगर आपको 10% में आना हैं तौ 40-50 हजार के कोर्सेस लेने चाहिये तभी भी इस कि गॅरेंटी नहीं होती की आप प्रॉफिट में होंगे क्योंकी कोर्सेस बेचने वालों के पास ऐसी कोई स्टेटर्जी होती तो क्या वो कोर्सेस से पैसा कमाते?

www.nishatimes.com

2.क्या शेयर मार्केट कोर्स खरिदना उपयोगी होगा?

यह कहना मुश्किल हैं की क्या शेयर मार्केट कोर्स करना उपयोगी हैं या नहीं क्योंकी यह व्यक्तिगत परिस्थितिया और लक्ष पर निर्भर करता हैं।
अगर आप शेयर मार्केट में नौसिखिये हो तो आपको शेयर मार्केट कोर्स खरिदने से आप उसकी शब्दावली और बेसिक बातें एक सही सिक्वेंस में सीख पायेंगे। लेकिन अगर आपको थोड़ा बहुत इसमें अनुभव हैं तो आप ऐसे मंहगे कोर्स करने से अच्छा कोई दुसरे मार्ग से बिना पैसे खर्च करें भी सीख सकते हैं।
आप वह कैसे सीख सकते हैं यह हम इस आर्टिकल में आगे बतायेंगे, तो यह आर्टिकल पुरा जरुर पढें।

शेयर मार्केट कोर्स किसको करना चाहिये?

अगर आप निवेश में रुची रखते हैं, अपने फायनांस की नॉलेज बढ़ाने चाहते हैं, वित्तीय क्षेत्र में करियर बनाना चाहते हैं तो आपको शेयर मार्केट को कोर्सेस से अथवा अन्य माध्यमों से सीखना चाहिये।

शेयर मार्केट कोर्स क्यु करना चाहिये?

वैसे तो आज के इस दौर में नॉलेज के लिये हर एक व्यक्ती को शेयर मार्केट को सीखना जरुरी हैं। लेकिन इसके लिये हर एक को मंहगे कोर्स लेकर सीखने की बिल्कुल भी आवश्यक नहीं हैं बाकी माध्यम से भी आप सीख सकते हैं लेकिन वैसे तो आप इसमें बिल्कुल भी नये हैं और आपको कहा से शुरु करना हैं और कहा खत्म इसका एक सटिक दिशा और एक मेंटॉर चाहिये तो ही आपको शेयर मार्केट कोर्स करने चाहिये। ओर सबसे महत्वपूर्ण बात अगर आप इतने मंहगे कोर्सेस के लिये पैसा दे सकते हैं तो ही आपको इसे करना चाहिये। क्योंकी ऐसा भी नहीं हैं की कोर्स करना मतलब शेयर मार्केट में सफलता की गॅरेटी मिलेगी, ऐसी गॅरेटी कोई नहीं देगा।

100 प्रतिशत शेयर बाजार का ज्ञान कोर्सेस से मिलेगा क्या?

शेयर बाजार एक जटिल और गतिशील प्रक्रिया हैं मतलब यह लगातार बदलती रहती हैं। इसमें रोज नई जानकारी आपके सामने आती रहेगा यह किसी कोर्स में नहीं सिखाया जाता। इसमें अनुभव का भी बहुत बड़ी भुमिका होती हैं। इसमें मनोविज्ञान को भी बड़ा रोल होता हैं। किसी कोर्स में आपको लालच और डर पर काबु पाना नही सिखायेंगे यह आपके अनुभव से ही आपमें आ सकता हैं।
कोर्स चींजे समझनें के लिये अच्छा होगा लेकिन इससे 100% अब मैं प्रॉफिट ही करुंगा ऐसा नहीं तो।

कोर्सेस की फिस कितनी होती हैं?

यह भी बहुत कम जादा होती हैं। मतलब यह आपके कोर्स प्रकार, संस्थान, कोर्स की अवधी, कोर्स में शामिल सामग्री पर निर्भर होता हैं।
अगर आमतौर पर भारत में देखें तो यह फिस 5,000 रुपयों से लेकर 1,00,000 लाख तक भी होते हैं।

कोर्स के अलावा कैसे सीख सकते शेयर मार्केट?

वैसे तो कोर्सेस बहुत-सी मंहगे होते हैं और आपको उसका कितना फायदा होगा यह भी पता नहीं होता तो यह छोड़कर और भी कई तरिके हैं।
आप युटुब जैसे विडियो प्लॅटफॉर्म से आप सीख सकते हो, नहीं तो आप किसी शेयर बाजार जानकार मित्र से भी सीखना शुरु कर सकते हो।

www.rishatimes.com

अगर मेरी माने तो किताबों से शेयर मार्केट सीखना सबसे सही तरिका हैं क्योंकी भारत में ही नहीं बल्की दुनियाभर में जो भी इस क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की हैं उनकी किताबें हैं जिसमें उन्होंने सारा बताया होगा की कैसे किन-किन चीजों के द्वारा उन्होंने यह सफलता हासिल कि वह पढ़कर आप भी उनकी सही तरिके से शेयर मार्केट को समझ पायेंगे। अगर आप कोई किताब लेने जायेंगे तो यह आपको 200-1000 तक ही मिल जायेंगी इसके लिये आपको हजारों-लाखों रुपये खर्च करने की जरुरत बिल्कुल भी नहीं होगी।

कौनसी किताब से शेयर मार्केट सीख सकता हुं?

अगर आपको शेयर मार्केट सीखने की अच्छी किताबें चाहिये तो नीचे लिंक दिये हैं जिससे मैं शेयर मार्केट सीखा हुं। यहां से आप इसे घर बैठे मंगवा सकते हैं।

क्या शेयर मार्केट कोर्स खरिदना उपयोगी होगा?

अगर मेरी राय सुने तो, अगर आपको शेयर मार्केट के बारे में कुछ भी पता नहीं हैं। अगर आप ABCD शुरवात करनेवाले हैं और मंहगी फिस दे सकते हैं तो आप शेयर मार्केट का कोर्स कर सकते हैं उससे आपको एक दिशा मिल जायेगी की कहा से शुरवात करना हैं और कहा खत्म तो आप करें।
लेकिन किताबों के जरिये सीखना ही सबसे सही और एकदम कम खर्चे का तरिका लगता हैं, जिससे आप शेयर मार्केट को सीख सकते हो।

शेयर मार्केट में निवेश के लिये क्या चाहिये होगा?

अगर आपको शेयर मार्केट में निवेश करना हैं अथवा ट्रेंडिंग करनी हैं तो आपको डिमैट अकाउंट की आवश्यकता लगेगी वह आप आसानी से घर बैठे मोबाईल से खुलवा सकते हो।

www.nishatimes.com

3.शेयर मार्केट की पढ़ाई कैसे की जाती है ?

शेयर मार्केट आप ऑनलाइन कोर्स, वेबसाईटस, कार्यशालाएं, विडियो प्लॅटफार्म, किताबें, किसी सलाहकार मित्र जैसे अनेक माध्यमों से आप सीख सकते हैं। इन अलग अलग माध्यमों से आप शेयर मार्केट की पढ़ाई कर सकते हों।
'शेयर मार्केट की पढ़ाई कैसे की जाती है' इसके बारे में हम A टु Z जानकारी इस आर्टिकल में बतानेवाले हैं। तो चलिये जानते हैं।

शेयर मार्केट क्या होता हैं?

शेयर मार्केट एक वित्तीय बाजार होता हैं जहां पर लोग शेयर और अन्य वित्तीय प्रोडक्ट्स को खरिदते और बेचते हैं। यह कंपनी द्वारा जारी किये गये शेयरों का व्यापार होता हैं। इसमें निवेशकों को कंपनी मालिकों द्वारा शेयर के माध्यम से कंपनी का हिस्सा प्रदान किया जाता हैं। यह वित्तीय गतिविधियों का केंद्र होता हैं जो निवेशकों को मुनाफा कमाने का अवसर प्रदान करती हैं।

बिना सीखें क्या शेयर मार्केट में काम सकते हैं?

बिना सीखें बिना समझे शेयर मार्केट में आना मतलब खुदका नुकसान करना होगा और यह बहुत जोखिमभरा हो सकता हैं। शेयर मार्केट एक विशेषतज्ञ और अनुभव की आवश्यकता होती हैं और यह आप कैसे हासिल कर सकते हैं यह हम आगे आर्टिकल में बतानेवाले हैं।

शेयर मार्केट सीखना क्यु जरुरी हैं?

आज के वक्त शेयर मार्केट सीखना काफी महत्वपूर्ण हैं। आपको जिवन मे सुधार, मुद्रास्फीति से बचाव, आर्थिक साक्षरता, महंगाई के हिसाब से आपके पैसों की बढ़त के लिये यह काफी महत्वपूर्ण हैं।
अगर आप पुराने जमाने की तरह अपना पैसा बैंक में रखकर आपको लगता होगा की यह सुरक्षित होगा तो यह आपकी सबसे बड़ी ग़लती हो सकती हैं।

शेयर मार्केट सीखने के अलग-अलग माध्यम कौनसे हैं?

ऑनलाईन वेबसाइट (Money Control, Zerodha Varsity, Financial Express), कोर्सेस (Udemy, Coursera), किताबें, विडियो प्लॅटफार्म, कार्यशालाएं जैसे अनेकों माध्यम से आप सीख सकते हैं अथवा पढ़ सकते हैं। लेकिन इसके लिये आपको हजारों- लाखों रुपयें खर्च करने की जरुरत नहीं हैं क्योंकी हम आर्टिकल में आपको ऐसा तरिका बताने जा रहे हैं जिससे आप कम पैसों में अच्छे तरिके से सीख सकते हैं।

शेयर मार्केट सीखने का सबसे सरल तरिका

वैसे तो आप शेयर मार्केट को फ्रि में भी युटबु और जेरोधा वर्सिटी जैसे माध्यमों से भी सीख सकते हैं लेकिन आपको कहा से शुरु करें और कहा खत्म यह बिल्कुल भी समझ नहीं आयेगा।
अगर आप किसी कोर्सेस से सीखना चाहते हो तो आपको पहले तो वह कोर्स क्या वाकई उपयोगी हैं या नहीं यह देखना पड़ेगा। अगर आज के समय आप कोई शेयर मार्केट का कोर्स सिखने जाते हो तो आपको हजारों लाखों रुपयें खर्च करने पड़ेंगे और कोर्स के बाद यह आपके कितने फायदे का रहेगा यह भी कहा नहीं जा सकता। इसलिये शेयर मार्केट सीखने का यह भी तरिका इतना इलेक्टिव नहीं होगा। तो फिर सवाल आता हैं की कैसे हम शेयर मार्केट को बिना ज्यादा पैसे गवाये और ट्रस्टेड जगह से सीख सकते हैं इसका जवाब हैं किताबें। सोचो अगर कोई सच में शेयर मार्केट के माध्यम से पैसा कमाया हैं वह आपको कोर्स और यूटुब पर तो नहीं बताते फिरेंगे की कैसे पैसे कमायें लेकिन बहुत से ऐसे लोगों ने अपनी किताबें जरुर लिखी हैं जिसमें उन्होंने अपने निवेश और शेयर मार्केट की स्टेटर्जी के बारे में सब बताया हुआ हैं वैसी किताबे खरिदकर हम शेयर

www.nishtimes.com

मार्केट को अच्छी तरिके से सीख सकते हैं और आपको कोई भी ऐसी किताब 200 से लेकर 1000 रुपयों के बीच ही मिल जायेगी।

शेयर मार्केट सीखने के लिये सबसे अच्छी किताबें?

मार्केट में आपको इसकी हजारों किताबें मिल जायेंगी जिससे आप शेयर मार्केट सीखकर पैसे कमा सकते हो। लेकिन मैं आपको वही किताबें बताऊंगा जो की दुनियाभर के लोगों ने पढ़ी हैं और वहां से शेयर मार्केट सीखकर शेयर मार्केट में भी अच्छा पैसा कमाया हैं।
यह नीचे दिये गये किताबों से आप शेयर मार्केट को पढ़ना सीख सकते हो।

www.nishatimes.com

4.IPO क्या है: अर्थ, परिभाषा, प्रकार और इन्वेस्टमेंट गाइड

IPO का मतलब होता हैं 'Initial Public Offering' जिसका उद्देश एक ही होता हैं जो की कंपनी के लिये धन जुटाना। इस आर्टिकल में हम IPO क्या होता है? इसके प्रकार, फायदे, नुकसान, कैलेंडर, और आईपीओ को खरिदते कैसे हैं इसकी पूरी जानकारी बतायेंगे।

शेयर मार्केट में आईपीओ क्या हैं?

आईपीओ की प्रक्रिया में एक निजी स्वामित्ववाली कंपनी सार्वजनिक कंपनी में बदल जाती हैं। अगर आसान भाषा में इसको समझे तो निजी कंपनीया निवेशकों से इक्विटी पुंजी जुटाने के लिये शेयर जनता कोई बेचती हैं इसी प्रकिया को आईपीओ (Initial Public Offering) कहा जाता हैं।
यह निवेशकों के लिये कमाई करने का अथवा अच्छा रिटर्न पाने का बढ़िया मौका रहता हैं लेकिन हर नया IPO बढ़िया मौका नहीं होता इसमें आपको नुकसान भी हो सकता हैं।
अगर आपको अभीतक 'IPO क्या है?' यह समझ नहीं आया तो कोई बात नहीं आगे हम इसके बारे में पुरी जानकारी आसान भाषा में समझानें वाले हैं।

आईपीओ से कमाई कैसे होती है?

आईपीओ के जरिये कंपनी निवेशकों से फंड इकट्ठा करती हैं और इस फंड को कंपनी अपने तरक्की के लिये इस्तमाल करती हैं इसके बदले में कंपनी निवेशकों को शेयर के रुप में हिस्सेदारी प्रदान करती हैं।
आईपीओ में जो शेयर आपको अलोट होते हैं वह आमतौर पर BSE और NSE इन दो भारत के मुख्य Stock Exchange में लिस्ट होते हैं। जहां लोग आसानी से शेयर को लिस्टिंग होने के बाद खरिद सकते हैं।

आईपीओ के प्रकार

आईपीओ के बहुत-से प्रकार होते हैं इसमें से महत्त्वपूर्ण प्रकार इस प्रकार।

1. प्री-आईपीओ- इसमें कंपनी अपने आईपीओ से पहले निजी निवेशकों से धन जुटाती हैं।
2. ऑफर फॉर सेल(OFS)- इसमें मौजुदा शेयरधारक कंपनी के शेयरों को बेचते हैं।
3. फॉलो-ऑन पब्लिक ऑफर- इसमें जो कंपनी पहले से ही स्टॉक एक्सचेंज में सुचीबद्ध हैं वो अपने नये शेयर्स जारी करती हैं।
4. ग्रीनशू इश्यू- इसमें कंपनी नये शेयर भी इश्यू करती है साथ साथ में मौजुदा शेयर धारक अपने शेयरों को भी बेच सकते हैं।
5. बुक बिल्डिंग- इसमें शेयर की किस्मत एक निश्चित रेंज के भीतर निर्धारित की जाती हैं और निवेशक इसमें बोली लगाते हैं।
6. फिक्स्ड प्राइस ऑफर- इसमें शेयर की किंमत पहले से ही निर्धारित होती हैं।

आईपीओ टाईमलाईन क्या होता हैं?

आईपीओ एप्लाय करने से लेकर शेयर लिस्टिंग तक एक प्रकिया होती हैं इसे IPO Timeline अथवा IPO Calendar भी कहा जाता हैं। इसने अनेक प्रकार के उप-विभाग होते हैं।

www.nishatimes.com

IPO खोले/बंद होने कि तिथि**-** इसमे आईपीओ बिडिंग लगने कि शुरवात और बंद होने की तिथी होती हैं जिसमें निवेशक आईपीओ के लिये आवेदन करता हैं।

आवंटन की तिथी**-** इसमें आवंटन की स्थिती आईपीओ के रजिस्टर द्वारा जनता को घोषित की जाती हैं।

रिफंड तिथी**-** आप जब आईपीओ के लिये एप्लाय करते हैं तो आपकी राशी फ्रिज कर दी जाती हैं और अगर आपको आवंटन के तिथी के बाद भी IPO नहीं मिलता तो आपकी राशी आपके खाते में भेज दी जाती हैं इस रिफंड की प्रक्रिया इस तिथी से शुरु होती हैं।

डिमैट अकाउंट केड्रिट तिथि**-** विभिन्न कंपनियों के लिये यह अलग अलग होता हैं, जब आपको लिस्टिंग तिथि से पहले डीमैट अकाउंट में एप्लाय किये गये आईपीओ शेयरों को क्रेडिट प्राप्त होता हैं।

लिस्टिंग तिथि**-** इसे IPO Listing भी कहा जाता हैं इस दिन आईपीओ स्टॉक एक्सचेंज में सुचीबद्ध किये जाते हैं और साथ में ट्रेडिंग के लिये उपलब्ध होते हैं।

आईपीओ के लाभ

- यह पुंजी उठाने अथवा उत्पन्न करने का काम करता हैं।
- यह दृष्टता और प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं यानी कंपनी कई बार अपनी ब्रांड इमेज सुधारने के लिये भी होती हैं।
- कई कंपनी अपने कर्मचारीयों को शेयर ऑप्शन ऑफर करती हैं।
- निवेशक कंपनी के विकास में भागीदार बन जाते हैं।
- इससे पुंजी बाजार का विकास होता हैं।
- इससे रोजगार को बढ़ावा मिलता हैं और नये रोजगार बढ़ने के भी अवसर पैदा होते हैं।

आईपीओ के नुकसान

जैसे आईपीओ के फायदे हैं वैसे इससे कई प्रकार के नुकसान भी हो सकते हैं।

- आईपीओ प्रकिया काफी जटिल और महंगी होती हैं इसका कंपनी पर वित्तीय दबाव भी पड़ता हैं।
- सार्वजनिक कंपनी बनने के बाद इसके बहुत सारे नियामक और अनुपालन की आवश्यकता होती हैं।
- कंपनी के प्रमुख शेयर होल्डर अपना हिस्सा नये निवेशकों को साझा करते हैं इससे कंपनी पर का नियंत्रण कम होता हैं। उन्हें बोर्ड के सदस्यें और निवेशकों का सम्मान करना पड़ता हैं।
- निवेशकों के धारण पर शेयर प्राइस में उतार चढ़ाव भी होता रहता हैं इससे कंपनी के प्रदर्शन पर भी प्रभाव पड़ता हैं।
- कंपनी को एक सीमीत कालावधी के बाद निरंतर अपने वित्तीय प्रदर्शन, रणनितीया और अन्य कई प्रकार की संवेदनशील जानकारी साझा करनी पड़ती हैं।
- सार्वजनिक कंपनीयों का निवेशकों पर काफी प्रभाव पड़ता हैं।

आईपीओ में निवेश कैसे करें?

किसी भी आईपीओ में आवेदन करना बहुत आसान हैं परंतु वह आपको मिलेगा या नहीं यह बहुतसारी चींजों पर डिपेंड होता हैं। अगर आप आईपीओ मे निवेश करना चाहते हैं तो नीचे दिये गये स्टेप्स को फोलो जरुर करें।

1. कंपनी के बारे में रिसर्च करें: सबसे पहले तो आप निवेश अथवा आईपीओ सब्स्क्राईब करने से पहले आप कंपनी के फाइनांस और भविष्य के बारे में रिसर्च करले।
2. डीमैट खाता खोले: IPO खरिदने अथवा सब्स्क्राईब करने के लिये आपके पास शेयर को डिजिटल रुप में रखने के लिये और उसके खरिदादारी और बेचने के लिये आपको डिमैट की आवश्यकता पड़ेगी तो वह आप किसी स्टॉक ब्रोकर के साथ निकाल सकते हैं अथवा बैंक में से भी निकलवा सकते हैं।

www.rishatimes.com

3. IPO को एप्लाय करें: जब भी आईपीओ सब्स्क्रिप्शन के लिये खुलता है तो आप अपने ब्रोकरेज के प्लॅटफॉर्म का इस्तमाल करके एप्लाई कर सकते हैं।
4. आवंटन और सूची: सब्स्क्रिप्शन प्रोसेस पुरा होने के बाद मांग के आधार पर आपको आईपीओ आवंटित होता हैं। अगर आपको उसमें शेयर का आवंटन मिलता हैं तो यह आपके डिमैट खाते में जोड़ दिये जाते हैं। स्टॉक एक्सचेंज पर सुचीबद्ध होने के बाद आप उसमे ट्रेड भी कर सकते हैं।

www.nishatimes.com

5.ट्रेडिंग क्या है?

दोस्तों, बहुत लोगों को ट्रेडिंग के बारे में पता होगा लेकिन जो भी हमारे नये मित्र शेयर मार्केट में आये हैं उन्हें ट्रेडिंग? और ट्रेडिंग के प्रकार कौन कौन से हैं? यह बताना बहुत ही महत्वपूर्ण हैं इसीलिए इस आर्टिकल में ट्रेडिंग क्या है और इनके अलग अलग प्रकार कौन कौन से हैं यह में आपको बताने जा रहा हुं।
मैं कोशिश करूंगा की आपको Trading के बारे में पुरी जानकारी इस आर्टिकल में ही मिल जाये और साथ साथ इसके फायदे और नुकसान भी आपको पता चले। यह आर्टिकल पढ़ने के बाद आपको दूसरे किसी जगह फिरसे कभी भी सर्च ना करना पड़े की ट्रेडिंग क्या हैं?

ट्रेडिंग क्या हैं? (Trading in Hindi)

चलिये हम शुरवात से बताते हैं, दरअसल ट्रेडिंग का अर्थ होता हैं किसी भी वस्तु की खरिदा अथवा बिक्री करना। वहीं अगर यह खरिदी बिक्री शेयर की हो तो इसे Stock Trading कहा जाता हैं। कोई भी ट्रेडर हो वह लाभ कमाने के हेतु ही ट्रेडिंग करता हैं। ट्रेडिंग में कम किंमत में वस्तु को खरिदा जाता हैं और ऊंचे किंमत पर उसे बेचा जाता हैं और इसी तरिके से लाभ कमाया जाता हैं।
चलिये आपको एक उदाहरण देकर अब समझाता हुं। समझें A नामक कंपनी हैं और इसकी एक शेयर की किंमत चल रही हैं 100 रुपये। यदी ट्रेडर को लगता हैं उसका भाव ऊपर जानेवाला हैं और यदी उसका भाव 52 रुपये हो जाता हैं तो अगर ट्रेडर ने 100 शेयर ले रखे होंगे और उसे 52 रुपयों पर बेच रहा हैं तो अब (100×52)-(100×50)= 200 रुपयें उसका लाभ हुआ।
लेकिन कई बार यह भाव ऊपर जाने की वजह नीचे आता हैं और ट्रेडर उसे कम भाव में ही बेच देता हैं तो उसे नुकसान भी होता हैं।
चलिये अब आपको ट्रेडिंग क्या होता हैं यह तो पक्का समझ आ गया होगा तो अब देखते हैं इनके कौन कौन अलग अलग प्रकार होते हैं और इनका क्या अर्थ होता हैं।

ट्रेडिंग के प्रकार (Trading Types)

1. इंट्रा-डे ट्रेडिंग: अगर कोई शेयर खरिदकर उसे होल्ड नहीं करते अथवा एक दिन में ही उसे बेच देते हो अथवा सौदा काट लेते हैं तो उसे इंट्रा-डे कहा जाता हैं। इस प्रकार के ट्रेडर को इंट्रा-डे कहा जाता हैं। इसमें आपको दिन के आखिर में लॉस हो रहा हैं या प्रॉफिट आपको उस सौदे को काटना होता हैं अथवा बाहर पड़ना होता हैं।
2. स्विंग ट्रेडिंग: इस प्रकार में शेयर को एक दिन से ज्यादा और एक महिने से भी कम समय के लिये शेयर को होल्ड करके रखा जाता हैं। हालाकी यह शुरुवाती लोगों के लिये सबसे अच्छा ट्रेडिंग प्रकार माना जाता हैं। इसमें जैसे इसका नाम हैं उसी तरह शेयर किंमतो में स्विंग का फायदा उठाया जाता हैं। अलग अलग ट्रेडिंग चार्ट पैटर्न और दुसरे भी पॅरामिटर का इस्तमाल करके यह किया जाता हैं।
3. ऑप्शन ट्रेडिंग: अगर शेयर मार्केट में भीजुआ किसी कहा जायेगा तो वह यही ऑप्शन ट्रेडिंग का प्रकार हैं। यह सबसे जोखिम भरा प्रकार माना जाता हैं। इस ट्रेडिंग में पलख झपकते ही लाखों का फायदा अथवा नुकसान भी हो सकता हैं। इसमें कॉल तथा पूट की खरिदी बिक्री की जाती हैं, यह एक ऑप्शन कॉट्रेक्ट होता हैं जो की मंथली अथवा विकली होता हैं तो एक्सपायरी के साथ आता हैं।
4. डिलीवरी ट्रेडिंग: यह सब प्रकारों में सबसे सुरक्षित ट्रेडिंग माना जाता हैं। इसमें आप किसी शेयर को खरिदकर एक महिना, एक वर्ष अथवा उससे भी जादा वक्त अपने डिमैट में रख सकते हैं और जब किंमत बढ़ जाती हैं तब उसे बेचकर मुनाफा कमाया जाता हैं। इस प्रकार के लिये कंपनी के फंडामेंटल्स और टेक्निकल एनालायसिस का अभ्यास होना अच्छा होता हैं।
5. एल्गो ट्रेडिंग: भारत में यह प्रकार अभी इतना इस्तमाल नहीं किया जाता। इसमें कंप्युटर और उसके अल्गोरिदम को प्रयोग करके स्वयंमचलित ट्रेडिंग की जाती हैं और इसे ब्लॅक बॉक्स ट्रेडिंग भी कहा जाता हैं।

6. **स्केलपिंग ट्रेडिंग:** इसमें कम समय में यानी 1 या 5 मिनट में ही भारी मात्रा में शेयरों को खरिदकर फिर बेचा भी जाता हैं। इसमें आपको मोटी पुंजी की जरुरत पड़ती हैं जिसे स्केलपिंग कहा जाता हैं।
7. **मार्जिन ट्रेडिंग:** इसमें आप कभी पुंजी में भी अधिक प्रमाण अथवा क्वांटिटी खरिद और बेच सकते हो। इसमे आपको कुछ प्रतिशत मार्जिन दिया जाता हैं इसलिये इसे मार्जिन ट्रेडिंग कहा जाता हैं। इसमें कई ब्रोकर कम पुंजी में कई ज्यादा गुना शेयर खरिदने की अनुमती देते हैं।
8. **मुहूर्त ट्रेडिंग:** किसी शुभ मुहूर्त को ली जानेवाली ट्रेडिंग को मुहूर्त ट्रेडिंग कहा जाता हैं। नैशनल स्टॉक एक्सचेंज ने यह प्रथा साल 1992 से शुरु की थी। यह ज्यादातर दिपावली के दिन श्याम को एक समय को निर्धारित करके इसे किया जाता हैं और इसे काफी शुभ माना जाता हैं।
9. **पोजिशनल ट्रेडिंग:** अगर ट्रेडर किसी खरिदे हुये शेयर को एक महिने से अधिक और एक साल के ज्यादा से ज्यादा अपने डिमैट खाते में रखता हैं उसे पोजिशनल ट्रेडिंग कहा जाता हैं। इसमें ट्रेडर को एक साल के भीतर ही अपने पोजिशन को काट देना पड़ता हैं।

ट्रेडिंग के नुकसान (Trading Disadvantages)

- बिना किसी जानकारी के अथवा किसी एक्सपर्ट की मदत के बिना आप ट्रेडिंग करोंगे तो आपका बड़ा नुकसान होने की संभावना रहती हैं।
- अगर आप स्टॉपलॉस नहीं लगाते हो तो आपकी पुंजी खत्म हो सकती हैं।
- जितनी पुंजी हैं उतना ही ट्रेड करें ज्यादा Margin लेने पर आपका रिस्क काफी बढ़ जाता हैं।

ट्रेडिंग के फायदे(Trading Advantages)

- ट्रेडिंग में आपको घर से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
- इसके द्वारा आप कम समय में ज्यादा पैसा कमा सकते हैं।
- इसमें आपको ट्रेडिंग की जानकारी के अलावा किसी भी प्रकार की डिग्री की आवश्यकता नहीं होती।
- इसमें आपके ऊपर कोई बॉस नहीं हैं आप अपने मन के मालिक हैं।
- ट्रेडिंग आप मोबाईल अथवा कंप्युटर से भी बड़ी आसानी के साथ कर सकते हैं।
- ट्रेडिंग के आपका नुकसान आपके कैपिटल का ही होता हैं परंतु प्रॉफिट की कोई सीमा नहीं होती।
- इसमें आप टेक्निकल एनालायसिस के द्वारा भी यह कर सकते हैं इसके लिये फंडामेंटल की जानकारी भी उपयोगी होती हैं परंतु आवश्यक नहीं होती। सपोर्ट अथवा रेजिस्टेंस को देखकर आप आसानी से ट्रेड कर सकते हैं।

ट्रेडिंग और निवेश में क्या अंतर होता हैं? (Trading and Investment Difference)

- Trading में आपको मार्जिन मिलता हैं जिससे आप कम पुंजी में भी ज्यादा क्वांटिटी खरिद सकते हो परंतु Investing में आपके पास जितनी पुंजी हैं उतना ही आप निवेश कर सकते हो।
- ट्रेडिंग में कम समय में ज्यादा प्रॉफिट बन सकता हैं वैसे निवेश करने पर उतना ज्यादा प्रॉफिट नहीं मिलता।
- ट्रेडिंग में ब्रोकरेज चार्ज अधिक होता हैं वहीं इन्वेस्टमेंट में यह बहुत कम होता हैं।
- ट्रेडिंग में कम समय में ज्यादा पैसा कमाया जाता हैं वहीं इन्वेस्टमेंट में ज्यादा प्रॉफिट के लिये लंबे अवधी के लिये रुकना पड़ता हैं।
- ट्रेडिंग में टेक्निकल एनालायसिस करना पड़ता हैं वहीं इन्वेस्टमेंट के लिये Technical Analysis के साथ साथ Fundamental Analysis भी करना पड़ता हैं।
- ट्रेडिंग में Price History, Support, Resistance, Candlestick Chart, Price Action देखना पड़ता हैं वहीं इन्वेस्टमेंट में आपको कंपनी की Balance Sheet, Business Model आदी फंडामेंटल्स देखने होते हैं।

www.hindimes.com

ट्रेडिंग कहा से सीखें (Learn Trading)

अगर आप कोई कोर्स खरिदने जाओगे तो आपको बहुत पैसे देने होंगे और उसके बाद आपको फायदा होगा, नहीं होगा? यह भी सोचना होगा। वैसे तो कई माध्यम में जैसे कोर्सेस, फ्रि विडियो प्लॅटफॉर्म, एक्सपर्ट पर्सन लेकिन इससे अच्छा होगा किताबों से सीखना क्योंकी जिन्होंने भी इसमे ऊंचाईयां हासिल की हैं उनके कोर्स तो नहीं होगी लेकिन उनके तरिके और विचार आप उनकी किताबों में पढ़कर सीख सकते हैं और वह भी कम से कम मुल्य में। यहां मैं ऐसी कुछ किताबें बता रहा हुं जो मैंने खुद ने पढी हैं और मुझे ट्रेडिंग सीखने में आसानी हुई हैं चाहे तो आप भी यह घर बैठे मंगवा सकते हो।

ट्रेडिंग सीखने के लिये कुछ बेहतरीन किताबें इस प्रकार-

टेकनिकल एनालायसीस ऑफ द फायनाशियल मार्केट
द इंटेलिजेंट इंवेस्टर
टेक्निकल एनालायसीस और कैडलस्टिक की पहचान
ट्रेडिंग चार्ट पॅटर्न
सायकोलॉजी ऑफ ऑप्शन ट्रेडिंग

आपने क्या सीखा:

इस आर्टिकल में आपने सीखा की ट्रेडिंग क्या होती है? ट्रेडिंग के प्रकार कौनसे होते हैं? ट्रेडिंग के फायदे और नुकसान क्या हैं? और हमें ट्रेडिंग किस प्रकार सीखनी चाहिये।
अगर आपको आर्टिकल पसंद आया हो तो इसे अपने मित्रों से शेयर जरुर करें और कोई भी सवाल और सुझाव हो तो हमें बेझिझक पुछें, हम उसका जवाब जल्द से जल्द देने का प्रयास करेंगें।

www.nishatimes.com

6.क्या मैं ट्रेडिंग किताबों द्वारा सीख सकता हुं?

ट्रेडिंग आप अलग-अलग कोर्सेस, सेल्फ लर्निंग, किताबें ऐसे अनेक माध्यमों से सीख सकते हैं लेकिन इन सबमे किताबों द्वारा ट्रेडिंग अथवा निवेश के बारे में सीखने सबसे बेहतर तरीका हैं। यह कैसे बेहतर हैं यह हम आपको इस आर्टिकल में बतायेंगे तो यह आर्टिकल आखिर तक पढें।

ट्रेडिंग क्या होता हैं? (What is trading)

ट्रेडिंग मतलब व्यापार यानी किसी चीज को खरीदने और बेचने की प्रक्रिया। शेयर मार्केट में शेयर को खरीदना/बेचना 'शेयर ट्रेडिंग' कहलाया जाता हैं। इसमें शेयरों को कम किमतों में खरीदा जाता हैं और जादा किमतों में बेचा जाता हैं। इसमें टेक्निकल एनालायसीस यानी चार्ट, पॅटर्न्स और इंडिकेटर्स जैसे अनेक चींजों को सीखना होता हैं।
इसमें ट्रेडिंग सायकोलॉजी (इमोशन्स और डिसीप्लीन) जैसी चीजें भी महत्वपूर्ण होती हैं।

ट्रेडिंग करने के लिये क्या आवश्यक होता हैं? (Requirements for Trading)

आपको ट्रेंडिंग करना हो या शेयर मार्केट में निवेश, इसके लिये आपको डिमैंट अकांउट की आवश्यकता होगी। बिना डिमैट अकाउंट के आप शेयर की खरिददारी करना अथवा उसे बेचना यह सब नहीं कर सकतें।

ट्रेंडिंग करना अच्छा होता हैं या बुरा?

ट्रेडिंग करना लीगल होता हैं लेकिन हम अगर अलग अलग रिसर्च की माने तो जादातर लोग इसमें नुकसानही करते हैं। कम समय में ज्यादा पैसे कमाने की चक्कर में लोग इसमें बुरे फसते हैं इसका मतलब यह नहीं की ट्रेडिंग करना ही नहीं चाहिये। जैसे हम किसी डिग्री अथवा कोर्स को सीखने के लिये 3-4 साल देते हैं फिर हमे उसका सारा नॉलेज प्राप्त होता हैं वैसे ही ट्रेडिंग भी आपको वह सीखने के बाद ही आयेगी।

अगर आप इसमें नये हैं तो आपको पहले पेपर ट्रेडिंग करना चाहियें इसमें अगर आपको लगातार सफलता मिल रही हैं तभी छोटी राशी के साथ इसमें उतर सकते हों।

हम ट्रेडिंग किस-किस माध्यम से सीख सकते हैं? (Different ways to learn Trading)

आप अलग अलग कोर्सेस, युटुब जैसे ऑनलाईन प्लॅटफार्म, वेबसाईट्स, किताबें, सेल्फ लर्निंग ऐसे अनेक माध्यमों ट्रेडिंग सीख सकते हों।

ट्रेडिंग का यह हैं सबसे बढ़िया तरीका (Best way to Learn Trading)

अगर आप युटुब जैसे ऑनलाईन प्लॅटफार्म पर जाते हो तो आपको जानकरी तो अनगिनत उपलब्ध होगी लेकिन आपको एक सिकवेन्स नहीं मिलेगा इसलिये आपको कोई गाईड कर सकता है तो यह भी तरीका अच्छा हैं। लेकिन आप किसी को देखकर या किसी की सुनकर अभी भी ट्रेंडिंग या निवेश ना करें यह आपके मेहनत के पैसों को बर्बाद कर सकता हैं।

www.ishatimes.com

आपको मार्केट में हजारों ऑनलाईन अथवा ऑफलाईन कोर्सेस मिलेंगे जिससे आप शेयर बाजार को अच्छे से सीख सकते हो। लेकिन अगर आप इसके लिये कहीं भी जायेंगे तो आपको पता चल जायेगा की यह कोर्सेस बहुत महंगे होगे जो की 10 हजार से शुरु होकर 1-2 लाख रुपयों तक चार्ज करते हैं। यह करने के बाद आपको कोई गॅरेंटी भी नहीं होगी की इसके बाद आप ट्रेडिंग अच्छे से करके लाखों कमा सकेंगे।

मेरे हिसाब से सबसे बढिया तरीका हैं किताबें अगर आपको शेयर मार्केट को सीखना हैं अथवा जानना हैं क्योंकी कोई भी ट्रेडिंग में सफल इंसान होगा उनके कोर्सेस आपको नहीं मिलेंगे लेकिन ऐसे कई लोग मिलेंगे जिन्होंने शेयर मार्केट में ट्रेडिंग करके अच्छे पैसे बनाये हैं। उन्होंने दरअसल अपनी सारी स्टेटर्जी और उसका तरीका सब अपने किताबों में लिखी हैं और कोई भी किताब आपको लगभग 1000 रुपयों के अंदर मिल जायेगी। इसके लिये आपको हजारों-लाखो खर्च करने की भी जरुरत नहीं हैं। इसलिये किताबों से ट्रेडिंग सीखना सबसे सही तरीका हैं।

शेयर मार्केट ट्रेडिंग के लिये अच्छी किताबें (Best Books for learn trading)

वैसे तो बहुतसारी किताबें आपको ऑनलाईन और ऑफलाईन मिल जायेंगे जहां से आपको हजारों किताबे उपलब्ध होगी। लेकिन मैं आपको मेरी पर्सनल अनुभव से कुछ अच्छी किताबें यहां बता रहा हुं। चाहे तो आप इसे एक एक करके पढ़ें या अपने समय अनुसार और आपकी पसंद अनुसार पढें।

ट्रेडिंग सीखने के लिये कुछ बेहतरीन किताबें इस प्रकार-

टेकनिकल एनालायसीस ऑफ द फायनाशियल मार्केट
द इंटेलिजेंट इंवेस्टर
टेक्निकल एनालायसीस और कैडलस्टिक की पहचान
ट्रेडिंग चार्ट पॅटर्न
सायकोलॉजी ऑफ ऑप्शन ट्रेडिंग

इसमें से बेस्ट ट्रेडिंग किताब कौनसी रहेगी? (Best Book to learn Share Market)

मेरे हिसाब से आपको इन्वेस्टमेंट की बायबल मानी जानेवाली किताब 'द इंटेलिजेंट इंवेस्टर' सबसे पहले पढ़नी चाहिये लेकिन यह किताब निवेश के सारे फंडामेंटल के बारे में हैं ना की सिर्फ ट्रेडिंग पर। अगर आपको सिर्फ इंट्रा-डे ही सीखना हैं तो आप टेकनिकल एनालायसीस ऑफ द फायनाशियल मार्केट यह किताब को पढ़नी चाहियें।

आखरी शब्द: आप किताबों से शेयर मार्केट ट्रेडिंग सींख तो जायेंगी लेकिन यह पढ़ना एक अलग बात हैं और इसे प्रॅकटिकल करना अलग इसलिये आपको सीखने के बाद भी कुछ महिने पेपर ट्रेडिंग (Virtual Trading) करनी चाहिये। अगर आप इसमें लगातार सफल रहते जो तो ही कम राशी से आपको इसमें उतरना चाहिये नहीं तो लंबे अवधी का निवेश सबसे बेहतर विकल्प रहेगा।

www.nishatimes.com

7.डिविडेंड का मतलब क्या होता है?

डिविडेंड को हिंदी में लाभांश कहा जाता हैं। लाभांश दो शब्दों से बनता हैं लाभ+अंश यानी Profit+Part, यानी प्रोफिट का हिस्सा।

डिविडेंड का मतलब होता हैं किसी भी कंपनी में जो लाभ होता हैं उसके अंश अथवा हिस्से को डिविडेंड कहा जाता हैं। कोई भी कंपनी जब लाभ कमाती हैं तो वह कुछ लाभ को शेयर होल्डर्स में बांटती हैं।
वारेन बफेट ने एक इंटरव्यू में बताया था की उनके एक साल सिर्फ एक कोको कोला कंपनी से उनको 2700 करोंड़ का डिविडेंड मिला था।

हर कंपनी डिविडेंड देती ही हैं ऐसा नही हैं यह पुरी तरह कंपनी के बोर्ड मेंबर्स मिटिंग में तय किया जाता हैं।

कंपनी डिविडेंड क्यों देती है?

दरअसल, कंपनी अपने शेयर होल्डर्स को डिविडेंड देती हैं इसके अलग अलग कारण हैं जैसे शेयर धारकों को लाभ देना, मजबूत वित्तीय स्थिती के संकेत देना, निवेशकों में विश्वास बनाये रखना और निवेशकों की आय की जरूरतों को पुरा करना यह और ऐसे अन्य कारण भी इसमें हो सकते हैं।
अगर आसान भाषा में कहा जाये तो कंपनी डिविडेंड अपने शेयर धारकों के प्रती जिम्मेदारी निभाना और उने मुनाफे का हिस्सा देने का तरिका होता हैं।

डिविडेंड कब और कैसे मिलता है?

दरअसल, कंपनी अपने बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की बैठक में डिविडेंड की घोषणा करते हैं। इसमें डिविडेंड की राशी और भुगतान की तिथी का उल्लेख किया जाता हैं।
डिविडेंड देने के लिये एक तारिख निर्धारित की जाती हैं उसे रेकॉर्ड डेट कहा जाता हैं। उस तारिख पर जिन निवेशकों के पास यह शेयर मौजुद होते हैं उन्हें इसका लाभ मिलता हैं।
इसमें एक एक्स डिविडेंड डेट भी होती हैं। उस दिन के बाद अगर कोई शेयर को खरिदता हैं तो उसे इस डिविडेंड का लाभ नहीं मिलता हैं।

डिविडेंड का भुगतान कैसे किया जाता हैं?

कंपनी ने बताई रेकार्ड डेट के दिन भुगतान किया जाता हैं जो आपको बैंक ट्रांसफर अथवा कभी कभी चेक के माध्यम से मिलता हैं।
डिविडेंड की राशी आपको सीधे आपके बैंक खाते में मिलता हैं जो की आपके डिमैट से जुड़ा हुआ होता हैं। अगर आपके पास शेयर का फिजिकल सर्टिफिकेट हैं तो आपको डिविडेंड चेक के माध्यम से दिया जाता हैं।
अगर किसी कारण वंश निवेशक को डिविडेंड का भुगतान नहीं होता तो निवेशक कंपनी से संपर्क कर सकता हैं।

डिविडेंड कितने दिन में मिलता है?

जादातर वक्त डिविडेंड की घोषणा के ३० दिन भीतर आपको डिविडेंड अपने बैंक खाते में प्राप्त हो जाता हैं। कभी कभी इसे प्राप्त करने में अधिक समय भी लग सकता हैं।

डिविडेंड कैसे चेक करें?

यह बहुत आसान विधी हैं इसमें आपको शेयर कि संख्या और कंपनी का हाल ही का DPS जानते हो तो आप आसानी से डिविडेंड का पता लगा सकते हों। आप DPS×S = D, D = आपके डिविडेंड होता हैं और S = इन्वेस्टर्स की मालकियत वाले शेयर की संख्या होती हैं।
इस फॉर्मुले का इस्तेमाल करके आप डिविडेंड को चेक कर सकते हैं।

क्या डिविडेंड देनेवाली कंपनीया अच्छी होती है?

जादातर डिविडेंड देनेवाली कंपनीया प्रॉफिटेबल ही होती हैं और कुछ कंपनीया डिविडेंड देने की बजय उसी पैसे को अपने बिजनेस में लगाती हैं। लेकिन डिविडेंड लेने से पहले आपको उस कंपनी की हिस्ट्री और फंडामेंटल्स अवश्य चेक करने चाहिये।

डिविडेंड और डिविडेंड यील्ड में क्या अंतर होता हैं?

डिविडेंड प्रती शेयर भुगतान की जानेवाली राशी हैं, जिसकी डिविडेंड यील्ड एक प्रतिशत होता हैं जो स्टॉक मुल्य पर निकला जाता हैं। डिविडेंड यील्ड एक वित्तीय अनुपात होता हैं जो दिखाता हैं की कंपनी सालाना अपनी स्टॉक के कितने प्रतिशत राशी निवेशकों को लाभांश देती हैं।
डिविडेंड यील्ड से निवेशकों को कितना समझ आता है की किस स्टॉक में निवेश करने से कितना लाभ मिल सकता हैं।

www.nishatimes.com

8.बोनस क्या होता हैं

बोनस शेयर क्या होता हैं?

बोनस शेयर मतलब कंपनी अपने शेयर धारकों के लिये बिना किसी अतिरिक्त किंमत के जारी करता हैं। शेयरधारक के लिये यह एक प्रकार का इनाम ही होता हैं। यह आमतौर पर कंपनी के लाभ अथवा संचित रिजर्व से जारी किया जाता हैं।
जब कोई कंपनी अपने निवेशकों को बोनस देती हैं तब शेयरधारकों की होल्डिंग में वृद्धि होती हैं परंतु कंपनी के प्रतिशत में हिस्सेदारी उतनी ही रहती हैं।
बोनस शेयर जारी करने से बाजार के मुल्य में कमी आ सकती हैं।
उदाहरण- समझिए, शेयरधारको के पास 100 शेयर मौजुद हैं और यदी कंपनी 1:1 अनुपात में बोनस जारी करती हैं तो शेयरधारको को 100 और शेयर मिलेंगे और कुल शेयर की संख्या 200 हो जायेगी।

कंपनीया बोनस क्यु जारी करती हैं?

कंपनी के पुंजी आधार को बढ़ाने के लिये: यह समझना थोड़ा जटिल हैं परंतु बहुत बार कंपनी अपनी पुंजी को बढ़ाने के इरादे से बोनस जारी किया जाता हैं।
छवी सुधारने के लिये: बोनस देने से शेयरधारक को खुशी होती हैं और इसका परिणाम कंपनी की छवी को सकारात्मक बनाती हैं।
शेयर की किंमत कम करने हेतु: जब किसी कंपनी के शेयर की किंमत ज्यादा होती है तो छोटे निवेशकों वो खरिदने में मुश्किल हो जाती हैं मतलब उसमें लिक्विडिटी कम हो जाती हैं इसलिये बोनस से इसमें लिक्विडिटी बढ़ाने में मदत करती हैं।

बोनस शेयर के प्रकार

देखा जाये तो बोनस के मुख्य रुप से दो प्रकार होते हैं।
नकद बोनस: इसमें नकद के बदले शेयर धारकों को अतिरिक्त शेयर जारी किया जाता हैं। यह वित्तीय स्थिती और भविष्य की योजनाओं पर निर्भर करता हैं। कंपनी अपने पास मौजुद नगद शेयर धारकों को बांटना चाहती हैं और हो सकता हैं वह अपने शेयर धारकों की संख्या बढ़ाना चाहती हैं।
स्टॉक बोनस: इसमें कंपनी अपने शेयर धारकों को केवल अतिरिक्त शेयर जारी करती हैं। इसमें कोई नकद राशी शामिल नहीं होती।
कंपनी अपने शेयर किंमतो को कम करने हेतू अथवा शेयरधारिता आधार को बढ़ाना चाहती है तो यह बोनस जारी करती हैं।
यह मुख्य दोनों प्रकार छोडकर भी अन्य प्रकार के भी बोनस होते हैं जैसे वॉरंट्स, कर्मचारी स्टॉक ऑप्शन ईत्यादी।

बोनस के लाभ?

बोनस जारी करना बहुत तरिके से निवेशकों के लिये फायदेमंद हो सकता हैं। चलिये जानते हैं इसके प्रमुख लाभ।

- निवेशकों को कंपनी में अधिक हिस्सा बन जाता हैं और अधिक निवेश मतलब महत्त्वपूर्ण निर्णयों में आपको वोटिंग का अधिकार भी मिल जाता हैं।
- शेयर की किंमतो में कमी आती हैं और इसमें लिक्विडिटी में इजाफा होता हैं।
- अगर कंपनी बोनस जारी करती हैं तो कई बार देखा गया हैं की शेयर किंमतो में वृद्धि देखी गई हैं।
- बोनस के बाद शेयर की संख्या बढ़ जाती हैं तो ट्रेडिंग की भी मात्रा बढ़ जाती हैं। शेयर में लिक्विडिटी आती हैं।

www.nishatimes.com

- कंपनी की छवी सकारात्मक होती हैं और इससे नये निवेशकों को आकर्षित करने में उपयोग होता हैं।
- कुछ मामलो में कंपनी की पुंजी आधार को बढ़ाने में मदत होती हैं।

बोनस शेयर के नुकसान?

बोनस शेयर देने के जैसे लाभ हैं वैसे कई नुकसान भी हैं।

- बोनस शेयर जारी करने के बाद कई बार शेयरों की किंमतो में गिरावट आती हैं क्योंकी शेयरों की संख्या बढ़ जाती हैं और डिमांड और सप्लाई के नियम अनुसार यह आम तौर पर देखने को मिल जाता हैं।
- हर बार कंपनी बोनस जारी करती हैं इसका मतलब हमेशा कंपनी की वित्तीय स्थिती मजबुत होना नहीं होता। कई बार कंपनी अपने वित्तीय स्थिती को छुपाने के लिये भी बोनस जारी कर सकती हैं।
- कई देशों में अतिरिक्त बोनस पर अतिरिक्त कर देना पड़ता हैं, अगर ऐसा हैं तो यह निवेशकों के लिये नुकसानदायक हो सकता हैं।
- कई बार बोनस शेयर अल्पकालिक अवधी में फायदे के लिये दिया जाता हैं। इसलिये की बार इसमें निवेशकों को लंबे अवधी के लिये नुकसान ही होते देखा गया हैं।
- बोनस जारी करने से कंपनी के शेयर का मुल्य कम हो जाता हैं क्योंकी कंपनी का लाभ अधिक शेयरों में बाटा जाता हैं।

बोनस लेने से पहले वित्तीय सलाहकार की सलाह अवश्य लेनी चाहिये।

बोनस शेयर पाने के लिये कितने दिन शेयर डिमैट मे रखना पड़ता हैं?

अगर आज 1 अक्टूबर हैं और कंपनी उस दिन बोनस डेट 16 अक्टुबर फिक्स करती हैं तो उसकी एक्स बोनस डेट 15 अक्टूबर होगी यानी आप उससे पहले यानी 15 अक्टूबर तक शेयर को खरिदकर रख सकते हो। अगर आप 15 या 16 अक्टुबर को शेयर को खरिदते हो तो आपको बोनस का लाख नहीं मिलेगा।
आसान भाषा में कहा जाये तो बोनस दिन के वक्त वह शेयर आपके डिमैट खाते में मौजुद होना चाहिये।

शेयर विभाजन और शेयर बोनस में क्या अंतर होता हैं?

बोनस शेयर **(Bonus)**	विभाजन शेयर **(Split)**
अतिरिक्त शेयर मिलता हैं।	मौजुदा शेयर का ही विभाजन किया जाता हैं।
शेयर की किंमत कम करना, शेयर धारकों को खुश करना अथवा कंपनी की छवी को सुधारना।	शेयर की किंमत को कम किया जाता हैं।
कंपनी की कुल पुंजी बढ़ जाती हैं।	कंपनी की पुंजी उतनी ही रहती हैं केवल शेयरो की संख्या बढ़ जाती हैं।
निवेशकों के पास अधिक शेयर हो जाते हैं और कुल निवेश की किंमत भी बढ़ जाता है क्युकी निवेश की किंमत बढ़ जाती हैं।	शेयर की संख्या अधिक हो जाती हों परंतु शेयर का मुल्य कम हो जाती हैं। कुल निवेश में कोई बदलाव नहीं होता।

www.nishatines.com

क्या बोनस देनेवाली कंपनीया अच्छी होती है?

बोनस देनेवाली सारी कंपनीया अच्छी होती हैं यह बिल्कुल भी सच नही हैं। कंपनी बोनस दे रही हैं यह एक सकारात्मक संकेत हो सकता हैं लेकिन लेकिन यह एकेला मजबुती पैमाना नहीं माना जा सकता।
आपको बोनस शेयर को खरिदने से पहले एक्सपर्ट से सलाह जरुर लेनी चाहिये।

बोनस शेयर गणना कैसे की जाती हैं?

चलिये, इसको समझने के लिये हम एक Example देखते हैं।
उदाहरण- मान लिजिए की आपके पास एक कंपनी के 100 शेयर हैं और उस कंपनीने 1:1 रेशों में निवेशकों को बोनस देने का फैसला किया हैं इसका मतलब आपको हर एक शेयर पर 1 शेयर बोनस के तौर पर मिलेगा।
यानी आपके पास कुल 100×100= 200 शेयर होंगे।
ऐसे आपके पास बोनस के बाद कुल शेयर की संख्या 200 हो जायेगी।

निवेशको को बोनस का लाभ कैसे मिलेगी?

अगर आप बोनस रेकार्ड डेट के दिन आपके पास शेयर मौजूद था तो आपको बोनस का लाभ मिलेगा और वह लाभ आपको सीधे आपके डिमैट खाते में मिलेगा उसके लिये आपको अलग कोई प्रकिया करने की आवश्यकता नहीं होती, आटोमेटिकली बोनस शेयर आपके डिमैट खाते में आपको दिखना शुरु हो जायेंगे।

www.nishatimes.com

9.किसी भी शेयर कि फंडामेंटल एनालिसिस कैसे करें 5 मिनट में

कोई भी शेयर खरिदने से पहले फंडामेंटल को कैसे देखें

शेयर मार्केट में जो भी नयें लोग शुरवात करते हैं तो वह किसी के टिप्स को सुनते हैं, किसी रिलेटेड, फ्रेंड या खबरों को देखकर शेयर खरिदते हैं और आधी अधुरी जानकारी के कारण वह उसी शेयर में इन्वेस्टर बन जाते हैं यानी नुकसान कि वजह से शेयर बेंच नहीं पाते। अक्सर ऐसी घटनायें नये लोगों के साथ ही होती हैं जो खुदको शेयर मार्केट का बादशाह समझने लगते हैं लेकिन उनको यह नहीं पता होता कि शेयर मार्केट में 100 लोगों में सिर्फ 10 प्रतिशत ही लोग मुनाफा कमा पाते हैं बाकी लोग कभी न कभी नुकसान कर बैठते हैं। जादातर लोग शेयर बाजार का गणित समज नहीं पातें और उससे नुकसान कर बैठते हैं।

इसी कारण आज हम आपको इसी विषय में कुछ ऐसी चींजों के बारे में जांच पड़ताल करना सिखायेंगे जो आपको शेयर को खरिदने से पहले देखनी होगी या परखनी होगी। सभी चींजों के बारे में बताना एक हि आर्टिकल में नामुमकिन होगा लेकिन जो चींजे महत्त्वपूर्ण लगती है वह चींजे आपको जरुर देखनी होगी अगर आप शेयर मार्केट में नये हैं।

शेयर खरिदते वक्त इन 9 बातों पर जरुर ध्यान दें

1. मार्केट कैप **(Market Cap):**

अगर आप शेयर मार्केट में कोई भी कंपनी में निवेश करना चाहते हैं तो आपको सबसे पहले उसका मार्केट कैंप देखना जरुरी हैं।

अगर किसी कंपनी कि मार्केट कैप 1000 करोंड़ रुपयों के नीचे है तो वह स्मॉल कैंप में आती हैं अगर मार्केट कैंप 1000 से लेकर 10000 करोंड़ रुपयों तक हैं तो यह मिड कैंप में आती हैं और अगर इसका मार्केट कैंप 10000 करोंड़ रुपयों से भी ज्यादा हैं तो वह लार्ज कैंप यानी बड़ी कंपनीयों में गिनी जाती हैं।

कंपनी का मार्केट कैंप जितना जादा उतना रिस्क कम, आपको कईबार स्मॉल कैंपवाले शेयर 20% ऊपर या 20% नीचे भी दिखाई देंगे ऐसे में अगर आप यैसे शेयरों में निवेश करते हैं तो यह काफी रिटर्न्स देगा भी पर आपका इन्वेस्टमेंट भी उतनी ही तेजी से खत्म कर सकता हैं अगर यह नीचे आता हैं तो इसलिये हो सके तो लार्ज कैंप की कंपनीयों को हि चुनें अगर आप निवेश करना चाहते हैं तो।

आप जो भी शेयर ले रहे हैं कम से कम उसकी मार्केट प्राइस 100 करोंड़ से उपर हो अगर नीचे होगी तो वह शेयर मॅनीकुलेट होने की ज्यादा संभावना होती हैं यह बात जरुर ध्यान रखें।

2. पीबी रेशो **(PB Ratio):**

यह बहुत महत्त्वपूर्ण फैक्टर होता हैं चलिये जानते हैं यह होता क्या हैं। करंट प्राइस को बुक व्हाल्यु से अगर डिवाइड करतें हैं तो हमको पीबी रेशों मिलता हैं यह हमेशा 5 के नीचे हो तो हि उस स्टॉक को आप कनसिडर करें अथवा ना करें।

अगर इसका करंट प्राइस/ बुक व्हाल्यु अगर 5 के ऊपर होता है तो वह महंगा होता हैं, अगर 2-5 होता है नॉर्मल और अगर 2 से कम होता है तो किमत सस्ती मानी जाती हैं। यह कईबार बहुत अच्छी कंपनीयों में भी देखा जाता हैं या तो कंपनी के ऊपर कर्जा हों इसलिये इसके साथ और भी चींजों को देखना जरुरी हैं।

www.nishatimes.com

पीई रेशों समझने के लिये एक उदाहरण के तौर पर देखते हैं टाटा मोटर्स कंपनी का शेयर। अगर इसकी आज की करंट प्राइज देखें तो वह 2671.25 रुपयें हैं और बुक व्हाल्यु 1240.37 रुपयें हैं तो इसकी पीबी रेशों अगर निकाले तो यह 2.1535 निकलकर आती हैं यानी यह नॉर्मल है आप इसमे इन्वेस्टमेंट के लिये सोच सकते हैं।

3. प्राइस अर्निंग रेशों और ओपीएम **(Price / Earning Ratio > OPM):**

ज्यादातर लोग P/E Ratio को व्हाल्यु लेकर बात करते हैं कि स्टॉक अच्छा है या नहीं लेकिन यहां और एक तरिका हम आपको बताते हैं की जिससे आप आसानी से पता कर सकते हैं कि स्टॉक सही हैं या नहीं?

आपको सिर्फ P/E Ratio नहीं देखना साथ साथ आपको OPM यानी Operating Profit Margin भी देखना हैं। आपको वही शेयर को खरिदना है जहांपर P/E Ratio ओपरेटिंग प्रोफिट मार्जिन से कम हो तो ही यह अच्छा स्टॉक्स माना जायेंगा। आपको यहां इसके साथ सभी पॅरामीटर देखने हैं यह एक हि पॅरामीटर देखकर नहीं चलेगा।

4. इंटरेस्ट कवरेज रेशो **(Interest Coverage Ratio):**

इससे आपको पता चल जायेगा कि कंपनी अगर ड्रा-डाउन या किसी कारण से नुकसान में जाती है तो कितने साल तो कितनी साल तक कंपनी नुकसान को उठा सकती है यह पता चलता है Intrest Coverage Ratio सें। अगर आप किसी शेयर में इन्वेस्टमेंट करना चाहते हैं तो उस शेयर का इंटरेस्ट कवरेज रेशों कम से कम 3 तो होना ही चाहिये मतलब 3 साल अवरेज कोई भी कंपनी को स्टेबल होने के लिये लगते हैं इसलिये यह जितना ज्यादा होगा उतने समय कंपनी नुकसान से उभर सकती हैं। किसी किसी कंपनी का यह रेशों निगेटिव में भी होता हैं तो वैसी कंपनी से दुरी रखना ही बेहतर होगा।

5. डेप्थ टु इक्विटी **(Dept to Equity):**

यह भी फॅक्टर फंडामेंटल के हिसाब से बहुत महत्वपूर्ण हैं। अगर बात करें डेप्थ टु इक्विटी कि तो यह हमेशा 1 से कम होना चाहियें यानी कंपनी के पास लोन कम होना चाहिते और एक बात और डेप्थ टु इक्विटी हमेशा इंटरेस्ट कवरेज रेशों से कम होना चाहियें वहीं शेयर को आप खरिदे।

6. गिरवी प्रतिशत **(Pledged Percentage):**

फ्लेज्ड यानी गिरवी रखना। अगर कोई प्रमोटर शेयर को गिरवी रख देता है तो यह इससे पता चल जाता हैं। फ्लेज्ड प्रतिशत हमेशा 1 के नीचे रहे तो बेहतर हैं वैसे तो जेरो हो तो और भी अच्छा है लेकिन अगर 1 से कम है तो भी आप इसके साथ जा सकते हैं।

7. अर्निंग पर शेयर **(EPS):**

EPS यानी अर्निंग पर शेयर कैसे देखें यह मैं आपको बताता हु ज्यादातर लोग 3 साल का ईपीएस पकड़कर अच्छा या बुरा इसका हिसाब लगाते हैं लेकिन मैं आपको एक ऐसा गणित बताऊंगा जिससे अबका इपीएस अच्छा है या बुरा यह पता लगाया जा सकता हैं।

इसके लिये आपको चालु साल के इपीएस में से पिछले 3 साल वाले इपीएस को माईनस करना होगा जो भी उत्तर आयेगा उसका प्रतिशत निकालना होगा और उसे 3 साल यानी 3 से डिवाइड करना होगा उसके बाद जो भी आकडा आयेगा वह इपीएस आपको शेयर के बारे में बहुत कुछ बतायेंगा।

उदाहरण के तौर पर देखते हैं रिलायंस का शेयर का इपीएस देखते हैं अगर साल 2018 और साल 2015 का इपीएस देखें तो वह 77.98 और 60.92 हैं। अगर इसका डिफरेंस निकाले तो यह -17.07 आता है और प्रतिशत कि बात कि जाये तो यह -22% होता है और अगर 3 साल के लिये लिया है तो हम इसे 3 से डिवाइड कर देते हैं

www.nishatimes.com

तो यह आता है -7% (Yearly Growth) तो ऐसे में अगर आप इसमें साल 2015 में इन्वेस्टमेंट करते तो आपको प्रॉफिट होता लेकिन अब यह निगेटिव हैं इसलिये यह हमारे रडार पर फिट नहीं बैठता।

8. फियर वाल्यु और फ्युचर ग्रोथ **(Fair Value & Future Growth):**

यह भी एक इंपोर्टेंट चींज हैं इसमें आपको फेयर व्हाल्यु यानी Yearly EPS जो हमने पिछे निकाला था उसको पीई रेशों से डिवाइड करना होगा तो आपको इसका फेयर व्हाल्यु (Yearly EPS/ PE Ratio) मिलेगा। अब इसके बात आपको फेअर व्हाल्यु (Fair Value × Current Market Price) को करेंट मार्केट प्राइस से मल्टिप्लिकेशन करना है तो आपको फ्युचर प्राइस मिलेंगी जिसे आपको देखना है उससे कंपनी आगे जाके कितना ग्रो कर सकती है यह पता लग सकता हैं।

9. पेग रेशो **(PEG Ratio):**

यह पॅरामिटर ज्यादातर अकांउट लोग देखते हैं अगर आप किसी स्टॉक की फंडामेंटल को जानना चाहते हैं तो PEG Ratio भी देखना आवश्यक है चलिये जानते हैं इसके बारे में। अगर पेग रेशों 0-1 होता है तो यह अच्छा स्टॉक्स माना जायेगा, 1-2 होता है तो नॉर्मल माना जायेगा और अगर यह निगेटिव में होता है तो आप इसे इग्नोर कर दें।

यह प्रेसेंट ग्रोथ को एक्सपेक्टेड फिचर ग्रोथ से डिवाइड करके निकाला जाता हैं मतलब यह आनेवाले समय में यह कैसी ग्रोथ कर सकता है या इनका बिजनेस मॉडेल कैसा रहनेवाला हैं यह दर्शाता है PEG Ratio।

आपने क्या सीखा:

अगर आप किसी से सीखेंगे या कहीं देखेंगे कि फंडामेंटल स्ट्रॉग स्टॉक कैसे निकलने हैं तो वहां आपको हजारो बातें बताई गई होगीं जो आपको कभी भी समझ नहीं आयेंगी। इसलिये अगर आप सिर्फ यह ऊपर दिये गये चींजों का देखकर या कोई फिल्टर इस्तमाल करके उपर के दिये गये पॅरामीटर से अगर निवेश करते हैं तो आपको आगे जाके बहुत फायदा मिल सकता हैं। आपने इस आर्टिकल में सिखा कि कैसे अच्छे फंडामेंटल शेयर को चुनते हैं।

www.nsetimes.com

10.मल्टीबैगर शेयर की पहचान कैसे करें?

दोस्तो, आज हम Multibagger Stocks कैसे धुंडते हैं यह आपको बड़ी आसान भाषा में इस आर्टिकल में समझानेवाले हैं जिसे पढ़कर आपको किसी से पुछना नहीं पड़ेगा की मल्टिबैंगर स्टॉक्स ढुंढते कैसे हैं? तो चलिये जानते हैं यह बढ़िया तरिका।

मल्टिबैंगर स्टॉक्स मतलब क्या?

Multibagger Share उन्हें कहा जाता हैं जो कुछ समय के अंदर ही कई गुना रिटर्न देते हैं। मान लिजिये कोई शेयर 5 साल के अंदर 5-10 गुना बढ़ गया तो उसे मल्टिबैंगर स्टॉक्स कहा जायेगा।

मल्टिबैगर शेयर ढुंढना आसान होता है?

दरअसल, मल्टिबैंगर शेयर आपको बहुत फायदा करता सकते हैं लेकिन इनकी कोई गैंरटी नहीं होती। इस तरह के शेयर को ढुंढने के लिये आपको अच्छी तरह से शोध करना पड़ता हैं जिसमें आपका जोखिम और सहनशिलता ऐसे कई सारी चींजे शामिल होती हैं। ऐसा नहीं होगा की आपका एक शेयर में मल्टिबैंगर की संभावना दिख गई तो वो शेयर 100% Multibagger रिटर्न देगा ही देगा इसके लिये आपको अलग अलग शेयर ढुंढकर दांव लगाना होगा तब जाके उसमें आपको एक मल्टिबैगर मिल सकता है।
लेकिन आज हम आपको ऐसा एक तरिका बताने जा रहे हैं जिसका इस्तमाल करके आप बहुत सारे ऐसे स्टॉक निकाल सकते हैं जिसकी आगे जाकर मल्टिबैंगर होने की संभावना बहुत ज्यादा होगी। तो चलिये जानते हैं कैसे ढुंढे Multibagger शेयर्स।

मल्टिबैंगर शेयर ढुंढने का तरिका

अगर आप इस आर्टिकल को आखिर तक पढ़ते हैं तो यह ढुंढने का आसान तरिका भी हम आपको आखिर में बतानेवाले हैं तो यह आर्टिकल आखिर तक पढें।
इसके लिये आपको नीचे दिये कुछ महत्वपूर्ण पॅरामीटर्स को चेक करना हैं और जो भी शेयर यह सारे बताये हुये चींजे पुरी करेगा उस शेयर के आगे जाकर ज्यादा रिटर्न देने की संभावना ज्यादा रहेगी।

1. **मार्केट कैपिटलाइजेशन:** जो भी शेयर आप चुननेवाले हो उसका Market Capitalization सबसे पहले आपको देखना हैं। जो भी शेयर चुनोगे तो उसका मार्केट कैपिटलाइजेशन 3000 करोंड़ के नीचे होना चाहिये।
2. **प्रमोटर्स होल्डिंग:** अगर वह शेयर मार्केट कैपिटलाइजेशन के ऊपर फिट बैठ रहा हैं तो आगे आपको उसका प्रमोटर्स होल्डिंग को देखना हैं। उस शेयर का Pramotors Holding कम से कम 50% से ऊपर होना चाहिये। यह 50 से ऊपर कितना ज्यादा होगा उतना ही अच्छा रहेगा।
3. **FII होल्डिंग्स:** ऊपरवाली चीजें अगर सही रहती हैं तो आपको उस शेयर में FII Holdings को देखना हैं जिसमें कम से कम FII Present हो यानी उसमे FII की थोडी बहुत शेयर होल्डिंग हो। FII की होल्डिंग अगर Quarterly बढ़ रही हैं तो यह भी एक अच्छा सिग्नल हैं।
4. **DII होल्डिंग:** इसमें भी ऊपर जैसा ही की उस शेयर में FII की होल्डिंग थोड़ी बहुत Present होनी चाहिये।
5. **डिविडेंड यील्ड:** अगर शेयर में ऊपर दिये गये सारे पॅरामिटर सही बैठ रहे हैं तो उस शेयर का Dividend Yield चेक करना हैं। कंपनी उनके शेयर होल्डर्स को कम ही हो लेकिन डिविडेंड देनेवाली होनी चाहिये।
6. **प्राइस टु अर्निंग्स(P/E):** आपको कंपनी का Price to Earning Ratio देना है जिसे हम PE रेशों भी कहते वह देखना हैं। कंपनी का PE 30 के ऊपर नहीं होना चाहिये वो 30 के नीचे ही होना चाहिये।

www.nishatimes.com

यह ऊपर दि गई चीजे अगर सही रहती हैं तो उस शेयर की संभावना हैं की आपको भविष्य में यह शेयर यल्टिबैंगर रिटर्न भी दे सकता हैं।
अगर आपको यह चींजे एक ही क्लिक में देखनी हैं तो नीचे दिये गये प्रोसेस से उसे 5 मिनट में ढुंढ सकते हो।

मल्टिबैगर स्टॉक्स ढुंढे स्क्रीनर की से

ऊपर दिये सारे पॅरामिटर आपको अलग अलग चेक करना बहुत मुश्किल हैं इसलिये आप Screener.in का फ्रि में इस्तमाल करके यह Stocks निकाल सकते हो। इसके लिये आप नीचे दिये स्टेप्स को फोलो करे।

- इसके लिये आप सबसे पहले screener.in पर जाइये।
- इसमें आप Tools में जाकर Create a Stock Screen पर जाइये।
- अब आपको उपर दी गई Query को डालकर Run this Query करना हैं। तो आपको ऊपर दिये सारे सारे पॅरामिटर जो भी पुर्ण करेंगे वो शेयर दिख जायेंगे। जो मल्टिबैंगर कि संभावनावाले शेयर होंगे।

आप यह तरिका पहले पेपर पेन लेकर करके देखो अगर सही लगे तो ही आप इसे आजमाये और मल्टिबैंगर स्टॉक्स को ढुंढे।

www.nishatimes.com

सूचना

यह किताब स्टॉक मार्केट के बुनियादी पहलुओं पर आधारित है, जो उन सभी के लिए उपयुक्त है जो इस क्षेत्र में शुरुआत कर रहे हैं। इस किताब का उद्देश्य आपको स्टॉक मार्केट की सामान्य जानकारी देना है, जिससे आप अपनी निवेश यात्रा को सही दिशा में शुरू कर सकें।

यदि आपने इस किताब में दी गई जानकारी को समझ लिया है और आपको और अधिक गहरी जानकारी की आवश्यकता है, तो आप हमारी वेबसाइट पर नियमित रूप से आर्टिकल पढ़ सकते हैं। हमारी वेबसाइट पर आपको स्टॉक मार्केट, निवेश रणनीतियों, और अन्य संबंधित विषयों पर विस्तृत जानकारी मिलेगी, जो आपकी सीखने की प्रक्रिया को और मजबूत बनाएगी।

हम उम्मीद करते हैं कि यह किताब आपके निवेश के सफर में एक मजबूत आधार बनेगी।

धन्यवाद!

Contact Us

contact@nishatimes.com

nishantpatil@nishatimes.com

Our Website

www.nishatimes.com

www.nishatimes.com